



Mr. Gaurav

15 Mar 1994

08:43 AM

Karmala

Model: Web-MyKundli

Order No: 119901701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 15/03/1994
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 08:43:00 घंटे
इष्ट _____: 05:12:51 घटी
स्थान _____: Karmala
राज्य _____: Maharashtra
देश _____: India

अक्षांश _____: 18:25:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:15:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:29:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 08:14:00 घंटे
वेलान्तर _____: -00:09:02 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:44:00 घंटे
सूर्योदय _____: 06:37:51 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:38:29 घंटे
दिनमान _____: 12:00:38 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 00:31:45 मीन
लग्न के अंश _____: 08:34:11 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: ब्रह्म
करण _____: गर
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: चू-चूड़ामणि
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1915	फाल्गुन	24
पंजाबी	संवत : 2050	चैत्र	2
बंगाली	सन् : 1400	चैत्र	1
तमिल	संवत : 2050	पंगुनी	1
केरल	कोल्लम : 1169	मीनम	1
नेपाली	संवत : 2050	चैत्र	2
चैत्रादि	संवत : 2050	फाल्गुन	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2050	फाल्गुन	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
 तिथि समाप्ति काल _____ : 19:29:46
 जन्म तिथि _____ : 3
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अश्विनी
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 08:26:36 घंटे
 जन्म योग _____ : अश्विनी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : ब्रह्म
 योग समाप्ति काल _____ : 10:49:56 घंटे
 जन्म योग _____ : ब्रह्म
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 19:29:46 घंटे
 जन्म करण _____ : गर
 भयात _____ : 08:29:54
 भभोग _____ : 67:48:54
 भोग्य दशा काल _____ : केतु 6 वर्ष 1 मा 13 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
 तिथि _____ : 1-6-11
 दिन _____ : रविवार
 नक्षत्र _____ : मघा
 योग _____ : विष्कुम्भ
 करण _____ : बव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मृग
 लग्न _____ : मेष
 सूर्य _____ : कर्क
 चन्द्र _____ : मेष
 मंगल _____ : सिंह
 बुध _____ : वृष
 गुरु _____ : कन्या
 शुक्र _____ : तुला
 शनि _____ : मिथुन
 राहु _____ : वृश्चिक

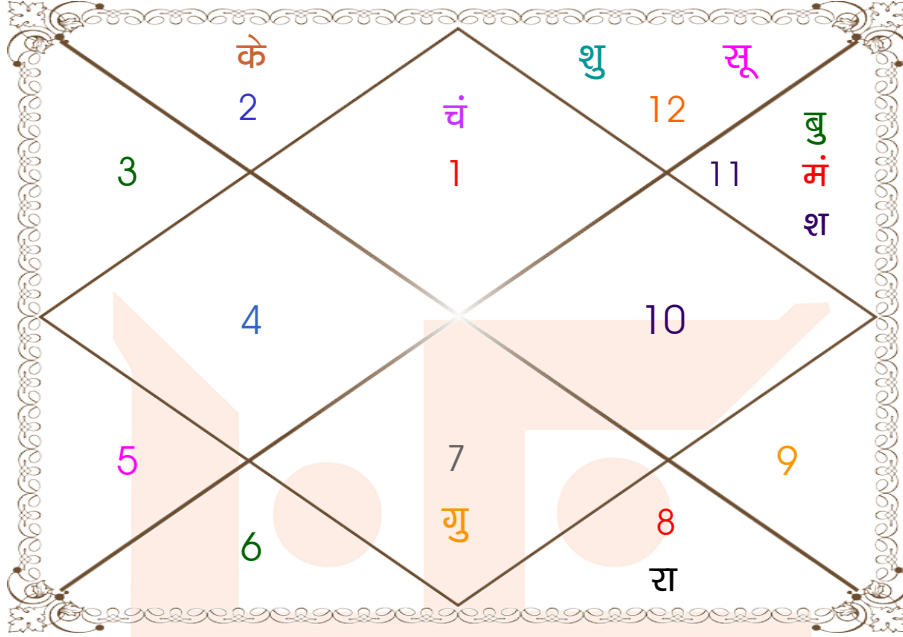


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

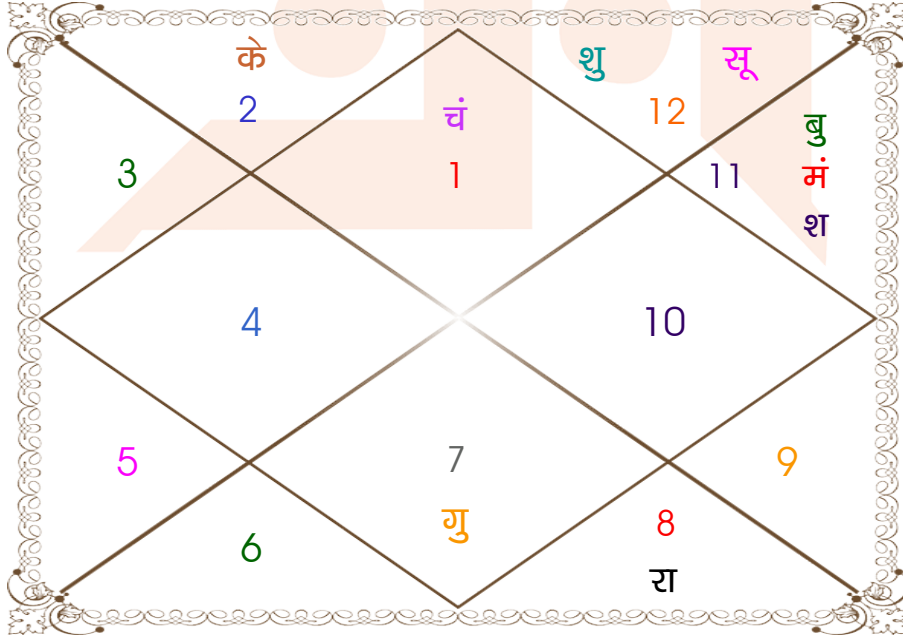


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु सू	चं ल	के	
श मं बु			
	रा	गु	

लग्न कुंडली

के	चं ल	शु सू	श मं बु
	गु	रा	

विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 1मा 13दि
केतु

15/03/1994

29/04/2113

केतु	27/04/2000
शुक्र	27/04/2020
सूर्य	28/04/2026
चन्द्र	27/04/2036
मंगल	28/04/2043
राहु	28/04/2061
गुरु	28/04/2077
शनि	27/04/2096
बुध	29/04/2113

योगिनी
भ्रामरी 3वर्ष 5मा 29दि
पिंगला

12/09/2024

13/09/2026

पिंगला	23/10/2024
धान्या	23/12/2024
भ्रामरी	14/03/2025
भद्रिका	23/06/2025
उल्का	23/10/2025
सिद्धा	14/03/2026
संकटा	23/08/2026
मंगला	13/09/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

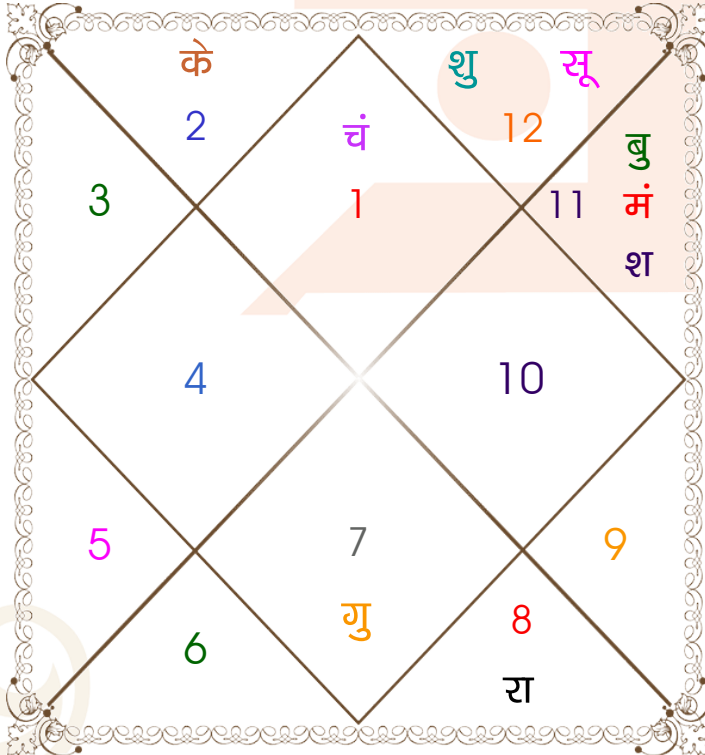
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	08:34:11	428:59:28	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	---
सूर्य			मीन	00:31:45	00:59:49	पूर्वाभाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			मेष	01:40:29	11:49:07	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	सम राशि
मंगल		अ	कुंभ	12:15:22	00:47:10	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	सम राशि
बुध			कुंभ	03:13:15	00:48:01	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	शुक्र	सम राशि
गुरु		व	तुला	20:32:40	00:02:43	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	14:20:37	01:14:33	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	उच्च राशि
शनि			कुंभ	11:38:15	00:07:03	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मूलत्रिकोण
राहु		व	वृश्चि	01:41:45	00:05:44	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	शत्रु राशि
केतु		व	वृष	01:41:45	00:05:44	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	सम राशि
हर्ष			मक	01:40:00	00:02:14	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
नेप			धनु	29:06:24	00:01:19	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	---
प्लूटो		व	वृश्चि	04:14:19	00:00:28	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
दशम भाव			मक	00:19:42	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	राहु	--

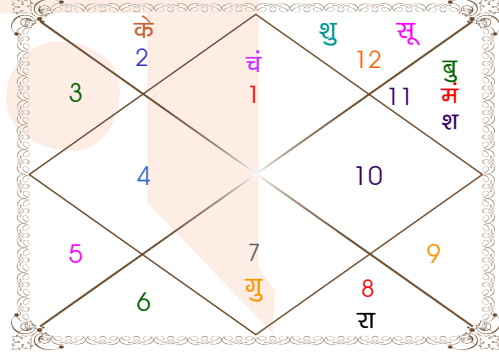
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:49

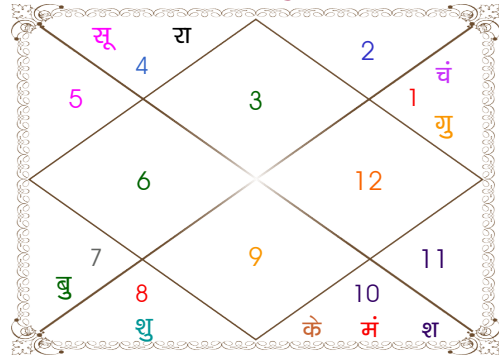
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 22:11:46	मेष 08:34:11
2	मेष 22:11:46	वृष 05:49:21
3	वृष 19:26:56	मिथुन 03:04:31
4	मिथुन 16:42:07	कर्क 00:19:42
5	कर्क 16:42:07	सिंह 03:04:31
6	सिंह 19:26:56	कन्या 05:49:21
7	कन्या 22:11:46	तुला 08:34:11
8	तुला 22:11:46	वृश्चिक 05:49:21
9	वृश्चिक 19:26:56	धनु 03:04:31
10	धनु 16:42:07	मकर 00:19:42
11	मकर 16:42:07	कुम्भ 03:04:31
12	कुम्भ 19:26:56	मीन 05:49:21

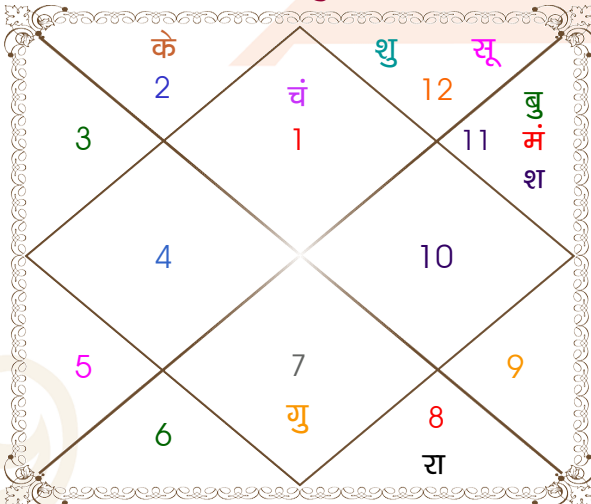
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	08:34:11
2	वृष	09:06:03
3	मिथुन	05:05:19
4	कर्क	00:19:42
5	कर्क	28:14:48
6	कन्या	01:23:55
7	तुला	08:34:11
8	वृश्चिक	09:06:03
9	धनु	05:05:19
10	मकर	00:19:42
11	मकर	28:14:48
12	मीन	01:23:55

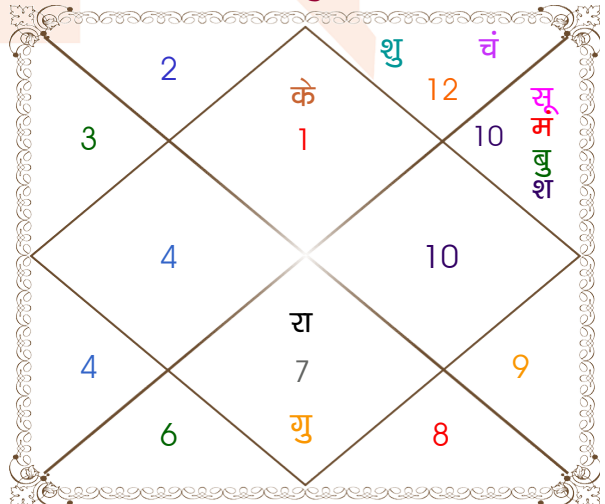
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उत्तराभाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 1 मास 13 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
15/03/1994	27/04/2000	27/04/2020	28/04/2026	27/04/2036
27/04/2000	27/04/2020	28/04/2026	27/04/2036	28/04/2043
15/03/1994	शुक्र 28/08/2003	सूर्य 15/08/2020	चंद्र 26/02/2027	मंगल 24/09/2036
शुक्र 24/11/1994	सूर्य 27/08/2004	चंद्र 14/02/2021	मंगल 27/09/2027	राहु 12/10/2037
सूर्य 01/04/1995	चंद्र 28/04/2006	मंगल 22/06/2021	राहु 28/03/2029	गुरु 18/09/2038
चंद्र 31/10/1995	मंगल 28/06/2007	राहु 16/05/2022	गुरु 28/07/2030	शनि 28/10/2039
मंगल 28/03/1996	राहु 28/06/2010	गुरु 04/03/2023	शनि 27/02/2032	बुध 24/10/2040
राहु 16/04/1997	गुरु 26/02/2013	शनि 14/02/2024	बुध 28/07/2033	केतु 22/03/2041
गुरु 22/03/1998	शनि 27/04/2016	बुध 21/12/2024	केतु 26/02/2034	शुक्र 22/05/2042
शनि 01/05/1999	बुध 26/02/2019	केतु 28/04/2025	शुक्र 28/10/2035	सूर्य 27/09/2042
बुध 27/04/2000	केतु 27/04/2020	शुक्र 28/04/2026	सूर्य 27/04/2036	चंद्र 28/04/2043

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
28/04/2043	28/04/2061	28/04/2077	27/04/2096	29/04/2113
28/04/2061	28/04/2077	27/04/2096	29/04/2113	00/00/0000
राहु 08/01/2046	गुरु 16/06/2063	शनि 01/05/2080	बुध 24/09/2098	केतु 25/09/2113
गुरु 03/06/2048	शनि 27/12/2065	बुध 09/01/2083	केतु 21/09/2099	शुक्र 16/03/2114
शनि 10/04/2051	बुध 03/04/2068	केतु 17/02/2084	शुक्र 23/07/2102	00/00/0000
बुध 27/10/2053	केतु 10/03/2069	शुक्र 19/04/2087	सूर्य 30/05/2103	00/00/0000
केतु 15/11/2054	शुक्र 09/11/2071	सूर्य 31/03/2088	चंद्र 28/10/2104	00/00/0000
शुक्र 15/11/2057	सूर्य 27/08/2072	चंद्र 30/10/2089	मंगल 25/10/2105	00/00/0000
सूर्य 09/10/2058	चंद्र 27/12/2073	मंगल 09/12/2090	राहु 14/05/2108	00/00/0000
चंद्र 09/04/2060	मंगल 03/12/2074	राहु 15/10/2093	गुरु 20/08/2110	00/00/0000
मंगल 28/04/2061	राहु 28/04/2077	गुरु 27/04/2096	शनि 29/04/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 1 मा 14 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र 28/04/2025 28/04/2026	चंद्र - चंद्र 28/04/2026 26/02/2027	चंद्र - मंगल 26/02/2027 27/09/2027	चंद्र - राहु 27/09/2027 28/03/2029	चंद्र - गुरु 28/03/2029 28/07/2030
शुक्र 28/06/2025 सूर्य 16/07/2025 चंद्र 15/08/2025 मंगल 06/09/2025 राहु 30/10/2025 गुरु 18/12/2025 शनि 14/02/2026 बुध 07/04/2026 केतु 28/04/2026	चंद्र 23/05/2026 मंगल 10/06/2026 राहु 26/07/2026 गुरु 04/09/2026 शनि 23/10/2026 बुध 05/12/2026 केतु 22/12/2026 शुक्र 11/02/2027 सूर्य 26/02/2027	मंगल 11/03/2027 राहु 12/04/2027 गुरु 10/05/2027 शनि 13/06/2027 बुध 13/07/2027 केतु 25/07/2027 शुक्र 30/08/2027 सूर्य 10/09/2027 चंद्र 27/09/2027	राहु 19/12/2027 गुरु 01/03/2028 शनि 26/05/2028 बुध 12/08/2028 केतु 13/09/2028 शुक्र 13/12/2028 सूर्य 10/01/2029 चंद्र 24/02/2029 मंगल 28/03/2029	गुरु 01/06/2029 शनि 17/08/2029 बुध 25/10/2029 केतु 23/11/2029 शुक्र 12/02/2030 सूर्य 08/03/2030 चंद्र 18/04/2030 मंगल 16/05/2030 राहु 28/07/2030
चंद्र - शनि 28/07/2030 27/02/2032	चंद्र - बुध 27/02/2032 28/07/2033	चंद्र - केतु 28/07/2033 26/02/2034	चंद्र - शुक्र 26/02/2034 28/10/2035	चंद्र - सूर्य 28/10/2035 27/04/2036
शनि 28/10/2030 बुध 18/01/2031 केतु 21/02/2031 शुक्र 28/05/2031 सूर्य 26/06/2031 चंद्र 13/08/2031 मंगल 16/09/2031 राहु 11/12/2031 गुरु 27/02/2032	बुध 10/05/2032 केतु 09/06/2032 शुक्र 03/09/2032 सूर्य 29/09/2032 चंद्र 11/11/2032 मंगल 12/12/2032 राहु 27/02/2033 गुरु 07/05/2033 शनि 28/07/2033	केतु 09/08/2033 शुक्र 14/09/2033 सूर्य 25/09/2033 चंद्र 12/10/2033 मंगल 25/10/2033 राहु 26/11/2033 गुरु 24/12/2033 शनि 27/01/2034 बुध 26/02/2034	शुक्र 08/06/2034 सूर्य 08/07/2034 चंद्र 28/08/2034 मंगल 02/10/2034 राहु 02/01/2035 गुरु 24/03/2035 शनि 28/06/2035 बुध 22/09/2035 केतु 28/10/2035	सूर्य 06/11/2035 चंद्र 21/11/2035 मंगल 02/12/2035 राहु 29/12/2035 गुरु 23/01/2036 शनि 21/02/2036 बुध 17/03/2036 केतु 28/03/2036 शुक्र 27/04/2036
मंगल - मंगल 27/04/2036 24/09/2036	मंगल - राहु 24/09/2036 12/10/2037	मंगल - गुरु 12/10/2037 18/09/2038	मंगल - शनि 18/09/2038 28/10/2039	मंगल - बुध 28/10/2039 24/10/2040
मंगल 06/05/2036 राहु 29/05/2036 गुरु 17/06/2036 शनि 11/07/2036 बुध 01/08/2036 केतु 10/08/2036 शुक्र 04/09/2036 सूर्य 11/09/2036 चंद्र 24/09/2036	राहु 20/11/2036 गुरु 10/01/2037 शनि 12/03/2037 बुध 05/05/2037 केतु 28/05/2037 शुक्र 31/07/2037 सूर्य 19/08/2037 चंद्र 20/09/2037 मंगल 12/10/2037	गुरु 27/11/2037 शनि 20/01/2038 बुध 09/03/2038 केतु 29/03/2038 शुक्र 25/05/2038 सूर्य 11/06/2038 चंद्र 09/07/2038 मंगल 29/07/2038 राहु 18/09/2038	शनि 21/11/2038 बुध 17/01/2039 केतु 10/02/2039 शुक्र 19/04/2039 सूर्य 09/05/2039 चंद्र 12/06/2039 मंगल 05/07/2039 राहु 04/09/2039 गुरु 28/10/2039	बुध 18/12/2039 केतु 08/01/2040 शुक्र 09/03/2040 सूर्य 27/03/2040 चंद्र 26/04/2040 मंगल 17/05/2040 राहु 10/07/2040 गुरु 28/08/2040 शनि 24/10/2040



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 5
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

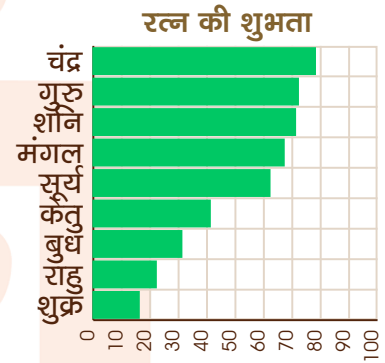


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मोती	चंद्र	78%	स्वास्थ्य, सुख
पुखराज	गुरु	72%	दम्पति, भाग्योदय, कम खर्च
नीलम	शनि	71%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	67%	धनार्जन, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
माणिक्य	सूर्य	62%	कम खर्च, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	41%	धन हानि, व्यय
पन्ना	बुध	31%	हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	22%	दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	16%	व्यय, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	27/04/2000	50%	66%	73%	31%	72%	28%	58%	0%	58%
शुक्र	27/04/2020	50%	66%	67%	44%	72%	41%	77%	34%	52%
सूर्य	28/04/2026	75%	84%	73%	31%	78%	0%	58%	0%	16%
चंद्र	27/04/2036	69%	91%	67%	44%	72%	16%	71%	0%	16%
मंगल	28/04/2043	69%	84%	80%	6%	78%	16%	71%	0%	52%
राहु	28/04/2061	50%	66%	55%	31%	72%	28%	77%	47%	16%
गुरु	28/04/2077	69%	84%	73%	6%	84%	0%	71%	22%	41%
शनि	27/04/2096	50%	66%	55%	44%	72%	28%	83%	34%	16%
बुध	29/04/2113	69%	66%	67%	53%	72%	28%	71%	22%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
अशुभ
अशुभ

क्षेत्र

कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
धन
सुख हानि
दुर्घटना



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।

स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके कय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित हो जाता है। नौकरी में थोड़ा बहुत रुकावट आती है या कभी पदावनति होने का भय होता है। प्रायः जातक को पैतृक सम्पत्ति का मनोवांछित लाभ नहीं मिलता है। व्यापारादि कार्यों में थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और विशेष परिश्रम करने के बावजूद भी उसका सही फल प्राप्त नहीं होता है। कामों में स्थिरता प्रायः नहीं आ पाती।

इस योग के प्रभाव से जातक अपने मित्रों के द्वारा कभी थोड़ा बहुत छले जाते हैं। जिस कारण जातक को नुकसान उठाना पड़ता है। कभी जातक के शरीर में रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है तथा आंशिक रूप में मानसिक परेशानी घेरे रहती है। जातक को कुटुम्ब से अपयश मिलता है एवं आत्मीय परिजनों से सम्मान नहीं मिलता है।

इस योग के कारण जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता एवं वाणी कभी-कभी दूषित हो जाती है। परिणामस्वरूप जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात-बात पर लड़ाई-झगड़े करने को भी तैयार हो जाता है और जातक को आंशिक रूप से आर्थिक नुकसान होता है तथा उधार में दिया हुआ पैसा प्रायः डूब ही जाता है। जातक को कभी शस्त्राघात का भय होता है। जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे षड्यन्त्र रचते रहते हैं, परन्तु अपने षड्यन्त्र में वे कभी सफल नहीं होते। जातक को अकाल मृत्यु का भय बना रहता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।

12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

ग्यारहवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, कोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(27/04/2020 - 28/04/2026)

सूर्य की महादशा 27/04/2020 को आरंभ और 28/04/2026 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य द्वादश स्थान में अवस्थित है। सूर्य दर्प, आत्मा, सात्विक स्वभाव तथा का चेतनता का प्रतिनिधित्व करता है जबकि द्वादश भाव मोक्ष, व्यय, यात्रा तथा धार्मिक विचारों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपकी धर्म के प्रति प्रवृत्ति होगी, आप यात्राओं पर जाएंगे और आपको शक्ति और प्रभुत्व की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। केवल आपकी आँखों को सावधानी की आवश्यकता है। आँख की पीड़ा और कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। अन्यथा आपका स्वास्थ्य और जीवन शक्ति उत्तम होंगे।

अर्थ :

आपका व्यय होगा, किन्तु फलदायी उद्देश्यों के लिये होगा। आपको विदेशी स्रोतों से भी धन की प्राप्ति होगी। षष्ठम भाव पर सूर्य की दृष्टि के कारण शत्रुओं, प्रतिस्पर्धियों और नौकरी से लाभ हो सकता है।

व्यवसाय :

आप दूसरों की सेवा कर उनसे मान्यता प्राप्त करेंगे। कुछ उतार-चढ़ाव की सम्भावना है, किन्तु कुल मिलाकर आप अपनी जीवन वृत्ति में अच्छा करेंगे। आपको सरकार तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से प्रतिष्ठा मिलेगी। विदेश प्रवास अथवा विदेश में जीवन-वृत्ति भी हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों को सहकर्मियों और साझेदारों से लाभ मिलेगा। आपके सम्बन्ध उनके साथ मित्रवत् होंगे। आप इस दशा में अनुबन्ध-पत्र, करारनामा आदि पर हस्ताक्षर कर सकते हैं जिनका संबंध विदेश से हो सकता है। आप सरकारी, पशासनिक आदि कार्यों में सफल होंगे। तकनीकी तथा विज्ञान-सम्बन्धी सेवाएं लाभदायक होंगी। आप रत्नों, सोने, संगमरमर आदि का व्यापार कर सकते हैं। आप आयात निर्यात का व्यापार भी कर सकते हैं जिसमें कुछ यात्राएं होंगी।

परिवार :

कुछ दिनों के लिये आप अपने बच्चों से दूर जा सकते हैं। आपको उनसे सुख आनन्द की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, कार्य-क्षेत्र में स्थिति उनके अनुकूल रहेगी, धन की प्राप्ति होगी तथा शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपकी माता के लिये समय भाग्यशाली रहेगा और आपको उनसे धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके पिता की एक अचल सम्पत्ति होगी तथा सुख और धन की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का जीवन सफल रहेगा और बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ मिलेंगे।

शिक्षा :

आप अपनी शिक्षा में, खासकर विज्ञान या वैसे किसी अन्य गम्भीर विषय में बहुत अच्छा करेंगे। किन्तु कठिन परिश्रम की आवश्यकता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

अंतर्दशा :- सूर्य - केतु
(21/12/2024 - 28/04/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 27/04/2020 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/12/2024 को आरंभ होकर 28/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान और कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। धन संचित होगा और सब सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। रुपये के लेन-देन में सावधान रहें, क्योंकि मामूली नुकसान हो सकता है। अगर सतर्कता से काम करेंगे तो शत्रुओं पर विजय मिलेगी। अप्रत्याशित धन मिल सकता है। अध्यात्म में सफल रहेंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धनागम होगा। परिवार से सकारात्मक संपर्क बनाये रखें।

आपके जीवन साथी को परिवारजनों से मधुर संबंध रखने चाहिएं। पिता भाग्यशाली रहेंगे और कर्ज से मुक्ति पाएंगे। माता को सफलता मिलेगी, वे भूमि क्रय करेंगी, यात्रा संभव है। भाई-बहनों के कार्य या निवास में परिवर्तन हो सकता है, माता से संभव मधुर रहेंगे, शिक्षा उत्तम होगी और अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

आपकी संतान सफल होगी; आपको उनसे अच्छे संबंध बनाये रखने चाहिएं। उन्हें तकनीकी कार्य मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो परिणाम मिश्रित रहेंगे, उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को आर्थिक स्थिति की समीक्षा करनी चाहिए। व्यापारियों को ज्यादा पांव नहीं फैलाना ही श्रेयस्कर होगा।

संक्रमण, फोड़े, नेत्र रोगों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगलवार, शनिवार को व्रत करें और श्वान को भोजन दें।

अंतर्दशा :- सूर्य - शुक्र
(28/04/2025 - 28/04/2026)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप दयालु और धर्मपरायण होंगे। प्राच्यविज्ञा में रुचि होगी। आपके कुछ शत्रु हो सकते हैं मगर आप उन्हें परास्त कर देंगे। आपका जीवन आरामदायक, चिंतामुक्त रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके मातहत और कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे। मामा पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। मुकदमे या विवाद में जीत होगी। कर्ज देते वक्त सावधान रहें।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; उन्हें विरोधियों पर विजय मिलेगी। पिता अचल संपत्ति या वाहन खरीद सकते हैं। माता की यात्राएं होंगी, भाग्य उत्तम होगा। भाई-बहनों को कार्य में प्रसिद्धि मिलेगी। आपकी संतान की शिक्षा में कुछ परिवर्तन हो सकते

महादशा :- चन्द्र
(28/04/2026 - 27/04/2036)

आपकी कुण्डली में चन्द्र की महादशा 28/04/2026 को आरम्भ तथा 27/04/2036 समाप्त होगी। इसकी अवधि दस वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र प्रथम भाव में अवस्थित है और आपके लग्न को बल प्रदान कर रहा है। यह आपकी शारीरिक संरचना, गठन, जीवन-शक्ति, ऊर्जस्विता, समृद्धि लम्बी आयु आदि का प्रतिनिधित्व करता है। संक्षेप में दस वर्ष की इस अवधि में आपको संतोष के साथ-साथ शांति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी समृद्धि अत्यंत सुदृढ़ होगी। यह अवधि गतिविधि से परिपूर्ण होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र लग्न में अवस्थित है जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों है। यह स्थिति सुखी और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इस दशा में कोई घातक रोग अथवा दुर्घटना नहीं होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने दैनिक कार्यों का उपयुक्त ढंग से सम्पादन करने में समर्थ होंगे। आप सुन्दर हैं और अत्यन्त भावुक, कुतूहली, व्यग्र तथा बेचैन हैं।

धन सम्पत्ति :

आपका मस्तिष्क तथा बुद्धि अधिक धनोपार्जन की दिशा में प्रवृत्त हैं क्योंकि दशेश चन्द्र मस्तिष्क का कारक है। आप अपनी धन-सम्पत्ति की वृद्धि करेंगे। आपके बैंक बैलेन्स तथा अन्य सम्पत्तियों में वृद्धि की सम्भावना भी है।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा के दौरान आप अपनी स्थिति तथा कार्य से संतुष्ट होंगे। यदि आप सेवारत हैं तो आपकी उन्नति के आसार हैं और व्यवसायी हैं तो व्यवसाय के विस्तार तथा नये कार्य के संकेत हैं। आपके मस्तिष्क में नये रचनात्मक विचार उभरेंगे जिनकी आपके सहकर्मी तथा उच्चाधिकारी सराहना करेंगे। चन्द्र दशा के कारण आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और न्यायप्रियता तथा उच्चे आचरण के लिए आप प्रसिद्ध होंगे। आप ऐसे व्यवसाय का चयन भी करेंगे जिसमें उतार-चढ़ाव हो। आप अधिकार के इच्छुक होंगे। आप एक सतर्क व्यक्ति हैं।

पारिवारिक जीवन :

सप्तम भाव, जो साझेदारी का भाव है, पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण इस काल

में आपकी साझेदारी और पारिवारिक जीवन उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी पूर्ण सहयोगी और सुन्दर होंगे। आपकी माता भी पारिवारिक जीवन में आपकी सहायता करेंगी और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपके पिता भी आपके व्यवसाय में आपकी सहायता कर आपको आत्म विश्वासी बनाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

तीस वर्ष की आयु के बाद आपका झुकाव उच्च शिक्षा की ओर होगा और आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(28/04/2026 - 26/02/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 28/04/2026 को प्रारंभ होकर 27/04/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 28/04/2026 को प्रारंभ होकर 26/02/2027 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

लग्न में चंद्र होने से आप सुंदर होंगे। इस अवधि में पारिवारिक और घरेलू सुख और माता का सान्निध्य प्राप्त होंगे। आपकी पत्नी सुंदर होंगी। विपरीत लिंग के व्यक्ति आपकी ओर आकर्षित होंगे। उनसे आपके संबंध प्रगाढ़ हो सकते हैं। आपका मूड समय-समय पर बदलता रहेगा। क्रोध में कार्य न करें; धैर्य धारण करें। आय और पद उत्तम रहेंगे।

अंतर्दशा :- चन्द्र - मंगल
(26/02/2027 - 27/09/2027)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 28/04/2026 को प्रारंभ होकर 27/04/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 26/02/2027 को प्रारंभ होकर 27/09/2027 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। इसे लाभ भाव भी कहते हैं। मंगल ऊर्जा और अचल संपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 2,5,6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा के दौरान आपके भाषणों में ओज रहेगा, मगर आप क्रोधी हो सकते हैं। आप धनवान बनेंगे और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। आप साहसी होंगे और उच्चवर्ग में धाक होगी। धन प्राप्ति की आपकी लिप्सा संतुष्ट नहीं होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र का जाप 108 बार करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - राहु
(27/09/2027 - 28/03/2029)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 28/04/2026 को प्रारंभ हुई और 27/04/2036 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 27/09/2027 को प्रारंभ होकर 28/03/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत,

दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि समाज में अपमान हो सकता है। कोई व्याधि हो सकती है। झगड़े विवाद से बचें। समय कठिन हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंतर्दशा :- चन्द्र - गुरु (28/03/2029 - 28/07/2030)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 28/04/2026 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 28/03/2029 को प्रारंभ होकर 28/07/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरे का परिचायक है। बृहस्पति शुभग्रह है। सप्तम में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 11, 1 और 3 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है और इनके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है।

इस अवधि में आप नीतिज्ञ और दयालु होंगे। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से लाभ होगा। दूसरों की भावनाओं की कद्र करेंगे। तीथयात्राएं संभव हैं। धर्म में रुचि रहेगी। शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 (रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के 99 जाप करने के बाद धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

